रात्रिक्लास 10/5/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

आज दीदी नहीं है। कहां गई यह तो बताया होगा कि अहमदाबाद में मकान देखने गई है। जितना बड़ा शो होता है उतनी कशिश करता है। जहां बड़ा गांव शहर होता है, तो देखने लिए जाते हैं ना। छोटा शो भी किया जाता है। बड़ा शो भी किया जाता है। गली–2 में भी किया जाता हैं; क्योंकि बाप से वर्सा लेना है। वहां एक बच्चा एक बाप से वर्सा लेते हैं। यहां फिर एक बाप से अनेक बच्चे वर्सा लेते हैं। बच्चे जानते हैं कि बच्चों को यह निश्चय है कि बेहद बाप आते हैं बेहद का वर्सा देने। बाप ऐसा वर्सा देते हैं जो कोई भी छीन न सके। यहां तो टुकड़–2 पर झगड़ा चलता रहता है। वहां अशान्ति का नाम–निशान नहीं। और बच्चों को भी यह समझना चाहिए कि बाप स्थापना ज़रूर करेंगे। कल्प–2 स्थापना ज़रूर होनी है। जब बाप को स्थापना ही करनी है तो रांझू रमज़वाज़ बच्चों साथ होगा। यहां कोई को गलीचा, टेबुल, कुर्सी खाना वगैरह दिया जाता है। जैसे बनारस का एक सेठ कहता है कि हम बाबा के पास जावें। तो अभी वह आवे तो खातरी ज़रूर करेंगे। अभी उसमें ज्ञान भी नहीं है। भक्त है; परन्तु पवित्रता अच्छी लगती है। पवित्रता पर ही तो सभी माथा झुकाते हैं। बाप समझाते हैं नई दुनियां में पवित्रता है तो शान्ति , सुख भी है। जो कि अभी नहीं है। अभी बच्चों को अपन को देखना है। और गुण ग्राहक होना है। समझाते भी हैं सहज, रास्ता भी सहज बताते हैं। इसका नाम ही है सहज राजयोग। बाप कहते हैं याद की यात्रा पर रहो। यह याद के लिए श्रीमत मिलती है। बच्चे याद की यात्रा रहने से ही पाप कटेंगे। फिर ज्ञान देते हैं 84 चक्र का। अच्छा, कोई आते हैं कहते हैं कुमारियां कितना मीठा ज्ञान देती हैं। अभी भक्तों की भी बड़ी सम्भाल करनी पड़ती है। लॉ कहती है सतयुग में भक्ति नहीं। कलियुग में भक्ति है। ज्ञान नहीं। ज्ञान सिर्फ़ संगम पर ही होता है। बच्चे जो आये हैं समझते हैं भक्ति तो हम जन्म–जन्मांतर करते आये। यह एक ही बार हम ज्ञान लेते हैं। यह पढ़ाई एक ही बार मिलती है। जैसे आई. सी. एस. बन गया फिर क्या पढ़े। तो यह भी बड़े ते बड़ा इम्तहान है और पढ़ाने भी है बड़ा। जितना पढ़ेंगे उतना ही अपन को फायदा पहुँचायेंगे। रेगुलर पढ़ना पड़े। कोई भी बात समझ में न आये तो दूसरे को न सुनाना चाहिए। जिससे संशय बुद्धि बन जावे। यह डबल बाप है। अपना भी नुकसान तो दूसरों का भी नुकसान। बाप तो फायदा पहुँचाते हैं। तो बच्चों को भी कहते हैं एक दो को फायदा दियो; परन्तु माया के बस नुकसान कर देते हैं। रावण तो बाप नहीं है। बाप से वर्सा मिलेगा। रावण से वर्सा नहीं मिलता। वर्सा मिलता है खुशी की चीज़ का। भक्ति में कोई खुशी की चीज़ नहीं मिलती है। बाप आते हैं सर्व का भला करने। सारी दुनियां का ..... भी कल्याण होता है। इसमें संशय वा मुँझने की दरकार नहीं। हर 5000 वर्ष बाद यह चक्र फिरता रहता है। जो एक्टर हैं वही फिर होंगे। यह चित्र है जो तुम्हारा बचाव करते हैं। यह चित्र तुम्हारी एमऑबजेक्ट बताते हैं। सुख–दुःख का खेल है। आधा सुख आधा दुःख नहीं है। सुख तुमको पौना हिस्सा मिलता है। जो मीठे हैं विचार–सागर–मंथन करते हैं। ब्रह्मा–विष्णु–शंकर को पतित–पावन नहीं कहेंगे; क्योंकि यह सभी शरीरधारी हैं। वह खुद आकर कहते हैं मैं इसमें प्रवेश करता हूँ। मैं आकर आत्माओं को पढ़ाता हूँ। सतयुग में मैं नहीं आता हूँ। फिर 5000 वर्ष बाद आऊँगा। बाप ..... एक बार आकर इस भारत को स्वर्ग़ बनाते हैं। कई कहते हैं क्या परमात्मा सिर्फ़ भारत में ही आता है। बस और कहां नहीं जावेंगे। हंसी कुड़ी भी कई करते हैं। जब भारत है तो और कोई धर्म नहीं तुम्हारे पास गीत है बाबा आपने जो दिया है वह और कोई छीन न सके। वह है हद का बाप। यह है बेहद का बाप। माँ–बाप कैसे बच्चों को सम्भालते हैं। यह ड्रामा में है। इसमें हम किसका दोष नहीं निकाल सकते हैं। बच्चों को बहुत सयाणा होना चाहिए। ऐसे नहीं अपना भी नुकसान तो औरों का भी नुकसान कर दो। यह समझानी कब कोई दे न सके। कई कहते हैं ऐसा ज्ञान तो कब हमको मिला नहीं है। हाँ 5000 वर्ष पहले मिला था। फिर अभी मिलता है। बाकी भक्ति तो जन्म–जन्मांतर करते आये हो। शास्त्र पढ़ते आये हो। तो बाबा आकर हमको बेहद की नॉलेज सुनाते हैं। बाबा ने मंत्र पढ़ाया है आई एक आत्मा। अहमंब्रह्मास्मि

यह कोई मंत्र नहीं। यहां ओम का भी अर्थ बाप समझाते हैं। हम आत्मा हमारा बाप परमपिता परमात्मा है। ऐसे नहीं कि हम आत्मा सो परमात्मा; लेकिन तुम जो चक्र लगाते हो। हम सो ब्राह्मण फिर हम सो देवता बनेंगे फिर हम सो क्षत्रिय फिर वैश्य, शूद्र फिर हम सो ब्राह्मण। सुखधाम और शान्तिधाम में जाते हैं। वह तो हम सो परमात्मा कहते हैं। हरेक बात में निश्चय करना चाहिए। गंगा का तट हो, गंगा का जल हो, यह असत्य है। बाकी सत्य क्या है? शिवबाबा की याद हो, शिवबाबा का तट हो, तब प्राण तन से निकले। यह सभी समझना चाहिए कि स्वर्ग़ की स्थापना बाप ही करते हैं। कितना मीठा बाबा है। प्रवाह थी पार ब्रह्म में रहने वाले परमात्मा की, जब वह मिल गया तो बाकी क्या। भक्तिमार्ग में सभी आशुकों को परमात्मा की प्रवाह थी वह बेहद का से वर्सा मिलता है बाकी क्या। ऐसी–2 बातों से अपने को बहलाते रहो। अन्दर याद भी करते रहो। इस ज्ञान योग से ही सारी सृष्टि बदलती है। तुम समझते हो हम सभी बदल जावेंगे। फिर रो देवता बन जावेंगे। सृष्टि भी ऐसी बन जावेगी। अभी अलफ़ को याद करो। जैसे बच्चा पैदा होता है तो छोटा होता है उनको मालूम नहीं पड़ता, दूसरे तो समझते हैं फलाने को भी बच्चा पैदा हुआ। मिलकियत का वर्सा आया। वहां संशय नहीं होता। यहां माया संशय बुद्धि बना देती है; इसलिए माया की सम्भाल करनी है। .... ..... बिटो, लाल बिटो, चुहरे की सम्भाल करना। कहां तुम थे। कहां तुम ऐसे बने हो। यह बहुत ही श्लोक बनाते थे। साुध–संत महात्मा सभी साधना करने वाले हैं इनका अर्थ कुछ भी नहीं जानते। यह मुफ़्त में खा–पी खलास कर देते हैं। जैसे मकर टिड्डी आये फसल को खा चले जाते हैं। यह साुध–संत भी मकर हैं। जो खा पीकर खलास कर देते हैं। बाबा निन्दा नहीं करते हैं, समझाते हैं। यह भी ड्रामा में इनका पार्ट है। बाप समझाते हैं कि यह भक्ति मार्ग के अनेक गुरू हैं। कहते हैं चढ़ाई है जहां से भी जाओ रास्ता मिल जायेगा; परन्तु यह कोई हिमालय पहाड़ थोड़े ही है। बाप कहते हैं आई एम युओर ओबिडीयन्ट सर्वेन्ट। इनको बुलाते हो कि आकर पतित से पावन बनाओ। इनको सोनार धोबी आद भी कहते हैं। यह कमाई वह नहीं। जो साधु–संत की कमाई है। यह तो बच्चों से 21 जन्मों लिए कमाई कराते हैं। यहां महल थो(ड़े) ही बनाते हैं। तुम शिवबाबा से लेते हो, देने की बात नहीं करनी चाहिए। अच्छा रूहानी बच्चों को गुडनाइट।

प्वाइन्ट्सः– तुम बच्चों ने यह नॉलेज कितनी बार ली होगी? बाप कितना बार आया होगा? इस तन ..... बाप कहते हैं अनेक बार सृष्टि को पलटाया है। याद की मुख्य है। दोनों इकट्ठे बैठे हैं तभी भी याद.....ठहरती। कायदे मुज़ीव जैसे तुम याद करते हो वैसे बाबा नही कर सकते। घड़ी–2 ख़्यालात आ जाती है। ..... भी हूँ मेरे लिए सहज है; परन्तु फिर भी भूल जाता हूँ। मैं न भूलूँ तो अभी ही कर्मातीत अवस्था हो जाये। शरीर छूट जाये। कारण है ना कोई। कर्मभोग भी होता रहता है। रोज़ इन्जेक्शन लगाता हूँ। बा(बा) कहते हैं कर्मातीत अवस्था पाना कोई मासी का घर थोड़े ही हैं। जानते हैं हम दोनों ही साथ हैं तो ..... कर्मातीत अवस्था अभी नहीं हो सकती। याद की बात ही और है। भल मैं घोड़े पर बैठा हूँ तो भी तुमको मेहनत करनी है। तुमने ही ऐसे कर्म किये हैं ना। फर्स्ट नम्बर सतोप्रधान तुम थे फिर तमोप्रधान भी तुम ही बनते हो सबसे जास्ती। तो मेहनत करनी पड़े। नम्बरवन तो नम्बर लास्ट बना है। फिर मेहनत से नम्बरवन बनेंगे ना। कर्मातीत अवस्था को पाने मेहनत करनी पड़े। कर्मातीत अवस्था बिगर यह पद पा नहीं सकते हैं। शरीर छूटेगा तब जब बाप का रथ आकर लेंगे। अच्छा ओम।